शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

भारत – अमेरिका संबंध और रूस वर्तमान परिदृश्य

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 15.06.2021

डॉ0 अमित कुमार गुप्ता
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
वीर शहीद केसरी चंद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
डाकपत्थर, विकासनगर, देहरादून
ईमेलः amitkgupta474@gmail.com

सारांश

भारत – अमेरिका संबंधों के मधुर युग की शुरुआत वर्ष 2005 में अमेरिका द्वारा भारत के साथ किए गए असैन्य परमाणु समझौते के साथ हुई। इस समझौते के फलस्वरुप भारत परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर किए बिना ही परमाणु रिएक्टरों की स्थापना कर सकेगा और अन्य देशों द्वारा भारत को इनके संचालन हेतु परमाणु ईंधन की आपूर्ति भी की जा सकेगी। अमेरिका द्वारा परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह एनएसजी में भारत की सदस्यता हेतु भी समर्थन किया गया। भारत – अमेरिका के मध्य प्रगाढ़ होते संबंधों के फलस्वरूप भारत – रूस संबंधों में कुछ दूरियां महसूस की जाने लगी है। प्रस्तु शोध पत्र में भारत–अमेरिका संबंधों का भारत –रूस संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इसका विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

भारत विश्व की एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था के साथ–साथ एक बहुत बड़ा बाजार भी है। इसी के कारण अमेरिका जैसा शक्तिशाली देश भारत की ओर मित्रता के हाथ बढ़ा रहा है। जहां भारत का अपने पड़ोसी देश चीन और पाकिस्तान से सीमाओं की सुरक्षा बड़ी चिंता है वहीं अमेरिका एशिया में बढ़ते चीन के प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए भारत के साथ मित्रता बढ़ाना चाहता है। रूस चीन के मध्य मधुर होते संबंध भी न केवल भारत के लिए चिंता का विषय है बल्कि अमेरिका भी चिंतित है। इसी के फलस्वरूप भारत अमेरिका मित्रता विकसित हुई है[1]।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारत – अमेरिका संबंधों के भारत–रूस संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। शोध पत्र उद्देश्य के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं –

1– भारत–अमेरिका संबंधों का अध्ययन करना।
2– भारत– रूस संबंधों का अध्ययन करना।
3– भारत–अमेरिका संबंधों के भारत–रूस संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालना।
4– क्या भारत अमेरिका से बढ़ते हुए संबंधों के कारण रूस से दूरियां बनाएगा ? इसका आकलन करना।

5– वर्तमान परिदृश्य के आधार पर भविष्य में भारत के दोनों देशों के साथ संबंधों का आकलन करना।

शोध पत्र के उपरोक्त उद्देश्यों के आधार पर भारत–अमेरिका संबंध और रूस : वर्तमान परिदृश्य का अध्ययन इस प्रकार है–

शीत युद्ध काल में भारत ने दो गुटों अमेरिका और रूस में संतुलन बनाते हुए गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण किया। इस काल में भारत–अमेरिका संबंध सामान्य ही रहे । वर्ष 1962 में भारत–चीन युद्ध के समय चीन की शक्ति को नियंत्रित करने के लिए अमेरिका ने भारत की सहायता की थी ,किंतु जब भारत द्वारा वर्ष 1974 में पहला परमाणु परीक्षण किया गया अमेरिका ने इसकी आलोचना करते हुए भारत पर अनेक प्रतिबंध लगाए। कश्मीर मुद्दा, सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता का भी अमेरिका द्वारा अंतरराष्ट्रीय मंच पर समर्थन नहीं किया गया। जबकि रूस हमेशा भारत के समर्थन में साथ देता रहा। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात भी जब भारत द्वारा वर्ष 1998 में दूसरा परमाणु परीक्षण किया गया तब भी अमेरिका द्वारा भारत की आलोचना की गई और अनेक प्रतिबंध भारत पर थोप दिए गए[2] ।

भारत अमेरिका के मध्य मधुर संबंधों का दौर वर्ष 2005 से शुरू हुआ। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश के मध्य ऐतिहासिक असैन्य परमाणु समझौता संपन्न हुआ। यह समझौता ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति एवं शांति पूर्ण सहयोग हेतु किया गया । जहां समझौते के कारण भारत परमाणु रिएक्टर स्थापित कर सकेगा वहीं परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में भी भारत की सदस्यता हेतु अमेरिका द्वारा आश्वस्त किया गया । यही कारण है कि भारत अमेरिका के मध्य मधुर संबंधों की शुरुआत हुई[3] । वर्ष 2008 में असैन्य परमाणु समझौते को अमेरिकी संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित किया गया। 8 अक्टूबर 2008 को तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश द्वारा इस पर हस्ताक्षर किए गए। समझौते के फलस्वरुप अमेरिका द्वारा वर्ष 1974 में भारत पर परमाणु परीक्षण किए जाने पर जो प्रतिबंध लगाए थे, उन्हें समाप्त कर दिया गया। इस हेतु अमेरिका ने अपने वर्ष 1974 के घरेलू उर्जा अधिनियम में संशोधन किया। जिसे नियम 123 नाम से जाना जाता है[4] । 10 अक्टूबर 2008 को भारत के तत्कालीन विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी और अमेरिका के यूएस सेक्रेटरी ऑफ स्टेट कोंडालीजा राइस ने एक साथ 123 समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के अंतर्गत दोनों देशों के मध्य संयुक्त नौसैनिक अभ्यास, भारत और अमेरिका से रक्षा सामानों की खरीद के अंतर्गत चिनूक और अपाचे हेलीकॉप्टर खरीदे गए[5] ।

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अमेरिका की यात्रा की गई । इस दौरान आतंकवाद, जलवायु, परिवर्तन, आर्थिक सहयोग, परमाणु निशस्त्रीकरण, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता इत्यादि मुद्दों पर सहयोग का संकल्प लिया गया। दोनों देशों के मध्य विज्ञान, तकनीकी, व्यापार, राजनीतिक मुद्दों पर समझौते भी हुए। वर्ष 2015 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा भारत के गणतंत्र दिवस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए[6]। इस दौरान वर्ष 2008 में हुए असैन्य परमाणु समझौते के गतिरोधों को आपसी समन्वय से समाप्त किया गया। पूर्व समझौते के अनुसार भारत में लगने वाले परमाणु संयंत्रों की निगरानी अमेरिका करेगा। इसे अमेरिका ने वापस लेते हुए निगरानी की शर्त समाप्त कर दी। अमेरिका का मानना था कि अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की निगरानी अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी करती ही है अतः

अमेरिका को अलग से निगरानी करने की आवश्यकता नहीं है। इसी दौरान दोनों देशों के मध्य एशिया – प्रशांत और हिंद महासागर में आवागमन, स्वतंत्रता, शांति, स्थिरता, सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय कानूनों द्वारा आपसी विवादों के समाधान हेतु समझौते पर भी हस्ताक्षर हुए[7] ।

वर्ष 2016 में अमेरिका द्वारा भारत को अपना प्रतिरक्षा साझीदार का दर्जा भी दिया गया, जिससे भारत–अमेरिका रणनीतिक सहयोग को गति मिली। वर्ष 2017 में अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत, अमेरिका, जापान, तथा ऑस्ट्रेलिया के मध्य हिंद प्रशांत क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने हेतु क्वाड(QUAD) की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को सीमित करना था। क्वाड गठन पर रूस ने भी आपत्ति जताई है। वर्ष 2018 में भारत–अमेरिका द्वारा सामरिक संबंधों की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम रखते हुए टू प्लस टू वार्ताओं की शुरुआत की। इसमें दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के साथ–साथ रक्षा मंत्री भी वार्ताओं में भाग लेंगे। इन वार्ताओं की शुरुआत 6 सितंबर 2018 को दिल्ली से हुई[8]। भारत–अमेरिका के मध्य द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों का विस्तार भी हो रहा है । वर्ष 2000 में जहां दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार 14 बिलियन अमेरिकी डॉलर था वहीं वर्ष 2018 में यह 87–5 अमेरिकी बिलियन डॉलर हो गया[9]। वर्तमान में दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार 124 अमेरिकी बिलियन डॉलर हो गया है। दोनों देशों के मध्य व्यापार निरंतर बढ़ रहा है[10] ।

उपरोक्त भारत–अमेरिका संबंधों में निकटता के कारण भारत–रूस संबंध भी प्रभावित हो रहे हैं। शीत युद्ध काल में रूस–चीन के मध्य दूरियां थी, किंतु सोवियत संघ के विघटन के पश्चात दोनों देशों के मध्य निकटता आई है। वैसे ही जैसे शीत युद्ध काल में भारत–अमेरिका के मध्य दूरिया थी। लेकिन वर्तमान में दोनों देशों के मध्य निकटता आई है। इन्हीं परिस्थितियों के कारण वर्तमान में यह प्रश्न उठने लगे हैं कि क्या रूस भारत से दूरियां बढ़ा लेगा ? क्या भारत–अमेरिका संबंधों का भारत–रूस संबंधों पर भी प्रभाव पड़ेगा ? वैसे तो भारत रूस मित्रता का अभी तक का इतिहास निर्विवाद रहा है, किंतु कहीं ना कहीं राष्ट्रीय हित प्रत्येक राष्ट्र के लिए सर्वोपरि होते हैं। एशिया में अमेरिका के बढ़ते प्रभाव के कारण रूस भी चिंतित है। यही कारण है कि अमेरिका को चुनौती देने के लिए रूस–चीन मित्रता विकसित हो रही है। इसी प्रकार की चुनौती भारत के समक्ष भी है। चीन और भारत के मध्य लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा है। दोनों देशों के मध्य सीमा विवाद भी बना रहता है। वर्ष 2020 में ही गलवान घाटी में चीन के हस्तक्षेप के कारण दोनों देशों के मध्य युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इसी कारण रूस–चीन मित्रता भारत के लिए चुनौती सिद्ध हो रही है[11]। रूस भारत को सैन्य सामान बेचने वाला प्रमुख देश है। रूस ने रक्षा, व्यापार, ऊर्जा, अंतरिक्ष इत्यादि महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत का समर्थन किया है। भारत चीन के मध्य गलवान घाटी में तनाव के चलते रूस द्वारा भारत को एस 400 मिसाइल रक्षा प्रणाली देने का वादा किया गया है। सोवियत संघ के द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी पर जीत की 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह कार्यक्रम में शामिल हुए। राजनाथ सिंह और रूस के उपप्रधान मंत्री यूरी बोरिसोव के मध्य हुई वार्ता के अंतर्गत उक्त मिसाइल प्रणाली के संबंध में वार्ता हुई। इसके अतिरिक्त सुखोई 30 एमकेआई तथा मिग–21 विमानों की आपूर्ति हेतु भी आश्वस्त किया गया। यह समझौता लगभग 5–43 अरब डॉलर का है[12]।

भारत पूर्व में अपनी सैन्य आवश्यकता का लगभग 80प्रतिशत सैन्य रूस से ही खरीदा था, परंतु वर्तमान में भारत द्वारा अमेरिका, फ्रांस, इजरायल आदि देशों से भी हथियारों की खरीद की

जा रही है। इसके फलस्वरूप भारत की रूस से सैन्य सामान की खरीद में कमी आई है। वर्तमान में भारत द्वारा लगभग 58 प्रतिशत सैन्य सामान ही रूस से खरीदा जा रहा है। किंतु उसके बावजूद रूस आज भी भारत को सबसे ज्यादा सैन्य सामान आपूर्ति करने वाला देश है। मेक इन इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत रूस द्वारा भारत के उत्तर प्रदेश में अमेठी में 7–5 एके –203 असोल्ट राइफल के निर्माण हेतु 12 हजार करोड रुपए का समझौता भी हुआ है[13] ।

दोनों देशों के मध्य भारत के संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि भारत न तो रूस से ही दूरी बनाना चाहता है और न ही अमेरिका का साथ छोड़ना चाहता है। भारत अपने राष्ट्र हितों की पूर्ति करने के लिए दोनों देशों के साथ संतुलन स्थापित करते हुए अपनी मित्रता को आगे बढ़ाना चाहता है। लेकिन अमेरिका के साथ भारत के बढ़ते संबंधों पर रूस के विदेश मंत्री सरगेई लावरोव ने कहा है कि अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी देशों के कारण रूस के साथ भारत की साझेदारी और विशेष संबंध कमजोर हो रहे हैं। 8 दिसंबर 2020 को रूस के सरकारी थिंक टैंक रशियन इंटरनेशनल अफेयर्स काउंसिल को संबोधित करते हुए लावरोव ने आरोप लगाया कि अमेरिका के कारण भारत रूस से दूर होता जा रहा है[14]। इससे स्पष्ट होता है कि भारत– अमेरिका संबंधों का भारत–रूस संबंधों पर प्रभाव पड़ रहा है, किंतु यह भी सत्य है कि भारत दोनों देशों के मध्य अपने संबंधों में संतुलन बनाते हुए आगे बढ़ रहा है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों को लिया गया है। शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु महत्वपूर्ण पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इत्यादि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक, तुलनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक शोध विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध का महत्व

लॉर्ड पामर्सटन ने कहा था अंतरराष्ट्रीय राजनीति में न स्थाई शत्रु होते हैं और न स्थाई मित्र, राष्ट्रों के अपने राष्ट्र हित ही सर्वोपरि होते हैं। अतः अंतरराष्ट्रीय संबंध यथार्थ और राष्ट्रीय हितों पर आधारित हैं। यही कारण है कि भारत अपने सैन्य साजो सामान की आवश्यकता के लिए केवल रूस पर ही निर्भर नहीं रहना चाहता है। क्योंकि एक ही राष्ट्र पर निर्भरता भविष्य के लिए संकट उत्पन्न कर सकती है। इसलिए वर्तमान में भारत अन्य देशों से भी सैन्य सामग्री खरीद रहा है । दूसरी तरफ रूस भी चीन को सैन्य सामग्री बेच रहा है। रूस द्वारा भारत को जिस एस–400 मिसाइल तकनीकी को देने का वादा किया गया है, इस तकनीक को रूस द्वारा वर्ष 2014 में ही चीन को बेचा गया था । चीन, पाकिस्तान को सैन्य आपूर्ति करने वाला सबसे बड़ा देश भी है। रूस द्वारा चीन को दिए गए सैन्य सामान चीन द्वारा पाकिस्तान को भी दिए जा रहे हैं जो कि भारत के लिए चिंता का विषय है, वहीं रूस द्वारा भी पाकिस्तान के साथ सैन्य अभ्यास और सैन्य समझौते किए जा रहे हैं। क्योंकि भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा चीन और पाकिस्तान दोनों ही देशों से लगती है और दोनों ही देशों के साथ भारत के मधुर संबंध नहीं है। राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौती को देखते हुए भारत ने अमेरिका के साथ संबंधों को प्रगाढ़ किया है। हालांकि रूस भारत का सदैव हितैषी रहा है। वह किन्ही भी वैश्विक परिस्थितियों में भारत का साथ दे सकता है। वर्तमान में जहां पूरा विश्व कोविड–19 के वैश्विक संकट से जूझ रहा है और भारत इससे सबसे ज्यादा प्रभावित है, वहीं रूस द्वारा भारत कि इस लड़ाई में भारत को मदद देने का भरोसा देते हुए रूस में निर्मित कोरोना वैक्सीन स्पूतनिक की भारत को आपूर्ति शुरू कर दी गई है और भविष्य में भारत में ही

रूस के सहयोग से स्पूतनिक वैक्सीन का निर्माण किया जाएगा[15] । जबकि अमेरिका द्वारा वैक्सीन तैयार करने के लिए भारत को आवश्यक कच्चे माल की आपूर्ति में देरी की जा रही है। हालांकि 25 अप्रैल 2021 को वाइडन प्रशासन ने कहा कि जल्द ही भारत को कच्चे माल की आपूर्ति की जाएगी। तत्पश्चात अमेरिका के दिल्ली में उप राजदूत डेन स्मिथ ने कहा कि भारत की मदद करने के लिए कोशिश की जा रही है[16] । अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है की भविष्य में भी रूस भारत का अभिन्न मित्र रहेगा।

निष्कर्ष

रूस और चीन के मध्य बढ़ती नजदीकियां, रूस द्वारा चीन को सैन्य साजो सामान की आपूर्ति, चीन द्वारा पाकिस्तान को सैन्य सामान की आपूर्ति, चीन द्वारा निरंतर भारतीय सीमाओं पर हस्तक्षेप, रूस द्वारा समय से भारत को सैन्य सामान की आपूर्ति न करना भारत के लिए चिंता का विषय है। इन्हीं परिस्थितियों के फलस्वरुप भारत की रूस पर निर्भरता कम हुई है। दूसरी तरफ एशिया में बढ़ते चीन के प्रभाव और चीन से रूस की निकटता के फलस्वरुप अमेरिका ने भारत की मित्रता को स्वीकारा है। भारत विश्व की उभरती हुई शक्ति और एक बहुत बड़ा बाजार भी है। इसका लाभ लेने के लिए अमेरिका और रूस दोनों ललायित है। क्योंकि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्र हित ही सर्वोपरि है, उसी के फलस्वरुप उक्त परिस्थितियां उत्पन्न हुई है। भारत–अमेरिका संबंधों का भारत–रूस संबंधों पर प्रभाव अवश्य पड़ा है किंतु रूस के साथ भारत की मित्रता अटूट और निर्विवाद रही है, जबकि अमेरिका के साथ ऐसी स्थिति नहीं रही है। अतः अंत में कहा जा सकता है कि भारत–अमेरिका संबंध वर्तमान अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों और भारत के राष्ट्र हितों की मांग है, लेकिन इसके प्रभाव से भारत–रूस संबंध विच्छेद नहीं हो सकते। जिस प्रकार रूस ने भारत का हमेशा साथ दिया है, भविष्य में भी वह अपने दायित्वों से पीछे नहीं हटेगा। यही भारत रूस संबंध की सत्यता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *प्रतियोगिता दर्पण* हिंदी मासिक, भारत अमेरिका संबंधों में सामरिक सहयोग का भविष्य, दिसंबर 2020, पृ0 **69**
2. रहीस सिंह, *अंतरराष्ट्रीय संबंध,* लेक्सिस नेक्सेस पब्लिकेशन, पृ0 **470**
3. सुमित गांगुली, *भारत की विदेश नीतिः पुनरावलोकन एवं संभावनाएं* (अभिषेक चौधरी द्वारा अनुवादित) , ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 2018, पृ0 **311 –12** ।
4. राजेश मिश्रा,*राजनीति विज्ञान एक समग्र अध्ययन,* ओरियंट ब्लैकस्वान पब्लिकेशन,दिल्ली, 2019, पृ0 **409.**
5. *प्रतियोगिता दर्पण* हिंदी मासिक, वही पृ0 **69.**
6. तपन बिसवाल, अंतरराष्ट्रीय संबंध, ओरियंट ब्लैकस्वान पब्लिकेशन, दिल्ली, 2016, पृ0 **217.**
7. डॉ अरुणोदय बाजपेयी,भारत व अमेरिका के बीच उभरत तनाव, *प्रतियोगिता दर्पण* हिंदी मासिक, सितंबर 2019, पृ0 **64**
8. डॉ अरुणोदय बाजपेयी,वही, पृ0 **65**.
9. www.indiaembassyusa.gov.in
10. *प्रतियोगिता दर्पण* हिंदी मासिक, वही, पृ0 *69.*
11. हिंदुस्तान हिंदी दैनिक समाचार पत्र, देहरादून, 17 जून 2020, पृ0 **1**.
12. योगेश कुमार गोयल, मेक इन इंडिया मुहिम में भारत का बड़ा सहयोगी रूस, *प्रतियोगिता दर्पण*

हिंदी मासिक, सितंबर 2020, पृ0 **79.**

13. योगेश कुमार गोयल, वही, पृ0 **107**.
14. प्रियेश मिश्रा, पीटीआई, 9 दिसंबर 2020, www.navbharattimes/indiatimes.com से लिया गया।
15. दैनिक जागरण हिंदी दैनिक समाचार पत्र, देहरादून, 15 मई 2021, पृ0 **13**
16. दैनिक समाचार पत्र, देहरादून,13 मई 2021, पृ0 **1**.